समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ नवम्बर २०२२ ● वर्ष : २६ ● अंक : ५ (निरंतर अंक : ३०५) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

७ दिवसीय विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर की मनोरम झलकें

विद्यार्थियों व अभिभावकों ने गुरुद्वार पर मनायी ऐसी अनोखी दिवाली जो शायद ही पूरे विश्व में किसीने कहीं मनायी हो । इसमें उनके जीवन की अनेक गुत्थियाँ सुलझीं व उनको मिली जीवन जीने की नयी उमंग व सत्प्रेरणा । १४

जप-अनुष्ठान

कीर्तन

हास्य-प्रयोग

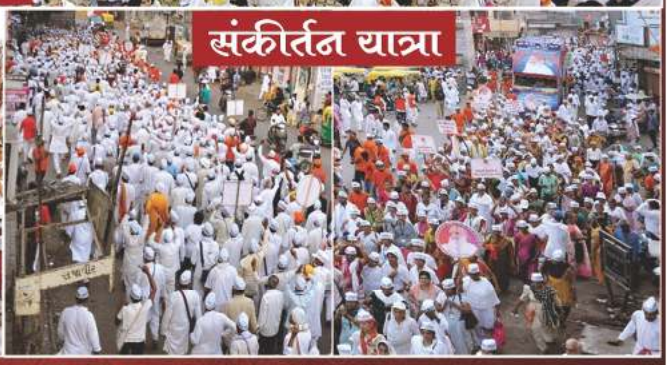

संकीर्तन यात्रा

पूज्य गुरुदेव के विरह में बिलखते शिविरार्थी

शिविर में विद्यार्थियों ने पाये सैकड़ों पुरस्कार

तुलसी पूजन दिवस : २५ दिसम्बर

तुलसी एक, नाम और गुण अनेक

- गाँवों में अधिक मात्रा में होने से **ग्राम्या**
- पत्ते पूत (पवित्र) करनेवाले होने से **पूतपत्री**
- शूल का नाश करनेवाली होने से **शूलघ्नी**
- भगवान विष्णु को प्रिय होने से **विष्णुप्रिया**
- मन, वाणी व कर्म से पवित्रतादायी होने से **पावनी**
- तीव्र प्रभावी होने से **तीव्रा**
- देव-गुणों का वास होने से **देव-दुंदुभि**
- काया को स्थिर रखने से **कायस्था**
- रोगरूपी दैत्यों की नाशक **दैत्यघ्नी**
- हर जगह आसानी से उपलब्ध होने से **सुलभा**
- लार ग्रंथियों को सचेतन करनेवाली होने से **सुरसा**
- राक्षस व राक्षसों जैसे पाप भगानेवाली होने से **अपेतराक्षसी**

सुख-शांति व मुक्ति का आनंद देनेवाला ग्रंथ ३ | बहुगुणकारी व पुष्टिकर सूखा मेवा : अंजीर १५

मान्यता का खेल
कौन अपना, कौन पराया ? - पूज्य बापूजी

सब दुःखों से छूटना हो और सबका सार पाना हो तो केवल दो बातें पक्की कर लो :

(१) जो अपना था, अपना है और अपना रहेगा, मौत भी जिसको छीन नहीं सकती उस अपने 'मैं' को अपना मान लो।

(२) जो अपना नहीं था, अपना नहीं रहेगा और अब भी 'नहीं' की तरफ जा रहा है उसको अपना नहीं मानो।

'नहीं' को (मिथ्या शरीर व संसार को) अगर नहीं (स्वप्नमात्र, आभासमात्र) मान लिया तो 'नहीं' नहीं हो जायेगा, तो दुःख नहीं रहेगा। और अपने स्व को, आत्मा को अपना मान लिया तो सुख की कमी नहीं रहेगी और दुःख चिपकेगा नहीं। मैं तो हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि केवल ये दो बातें पक्की कर लो।

मानना तुम्हारे हाथ की बात है। कुँवारी कन्या माँ-बाप का घर अपना मानती है परंतु फेरे फिरने के बाद बोलती है कि 'वह तो मेरे भाइयों का घर है, यह मेरा घर है।' मान्यता बदल जाती है न ! तो मान्यता बदलने में आप स्वतंत्र हैं। न जाने किस शरीर में क्या मान्यता थी, अभी मान लिया 'मैं बालमुकुंद हूँ... मैं नारायण हूँ... मैं गोविंद हूँ... मैं वासुदेव हूँ...।' हजार आदमी सोये हैं : 'ऐ वासुदेव शर्मा !...' आवाज लगाते ही वासुदेव उठ के खड़ा हो गया, 'बोलिये भैया !' यह भी तो माना है न - 'मैं वासुदेव हूँ, मैं मोहन हूँ, मैं फलाना हूँ...।' ऐसे ही मान लो कि ये शरीर के नाम हैं, इनको जो जानता है वह मैं हूँ।

वास्तव में तुम यह शरीर नहीं हो। शरीर तो कई बार पैदा हुआ और कई बार मर गया। शरीर को मैं मानने से और शरीर से संबंधित वस्तुओं, व्यक्तियों को मेरा मानने से ही यह जीव बंधन में फँसता है। मान्यता के कारण ही जीव बंधन का शिकार होता है। अगर वह मान्यता को छोड़ दे तो जीवात्मा परमात्मा का सनातन स्वरूप है ही।

आत्मा को मैं मानने से और परमात्मा को मेरा मानने से जीव मुक्त हो जाता है। ऐसा चिंतन-मनन करके मुक्तात्मा बन जाओ।

श्रीमद् भगवद् गीता जयंती :
३ दिसम्बर

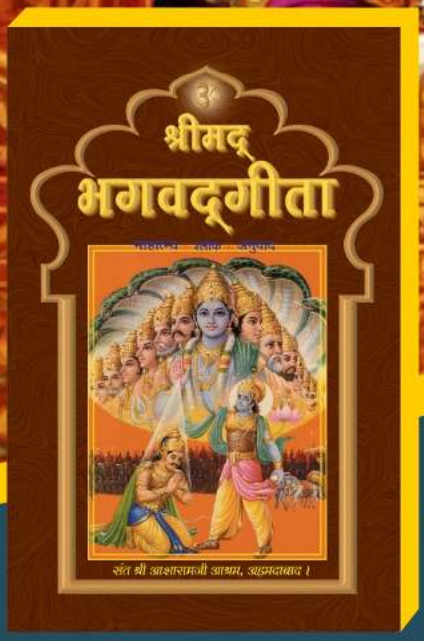

सुख-शांति व जीवन्मुक्ति का
आनंद देनेवाला महान ग्रंथ

श्रीमद्भगवद्गीता

– पूज्य बापूजी

तुलसी पूजन दिवस

२५ दिसम्बर

आरोग्य, भगवत्प्रीति, सम्पन्नता प्रदायक

तुलसी

तुलसी धरा के लिए वरदान है । तुलसी का धार्मिक महत्त्व तो है ही, इसका वैज्ञानिक महत्त्व भी कम नहीं है । इसके पत्ते, मंजरी और टहनियाँ कई बीमारियों में औषधि के रूप में काम आते हैं। तुलसी के पौधे की पूजा, आरती और उसके समक्ष दीपक जलाने से सती वृंदा की कृपा मिलती है और भगवान विष्णु स्वयं उस पूजक की रक्षा करते हैं।

कई अनुसंधानों द्वारा ज्ञात हुआ है कि तुलसी से ओजोन गैस निकलती है जो वायु-शोधन का काम करती है।

इसीलिए सदियों से हमारे पूर्वज तुलसी का पूजन, परिक्रमा व सेवन करते रहे हैं।

तुलसी की वायु भी देती निरोगता

जहाँ तुलसी का पौधा होता है वहाँ पर जब वायु चलती है तो तुलसी से सम्पर्क स्थापित करती है, जिससे आसपास का वातावरण कीटाणुरहित हो जाता है। तुलसी की वायु का स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव बड़ा कल्याणकारी है। इससे रक्त शुद्ध होता है,

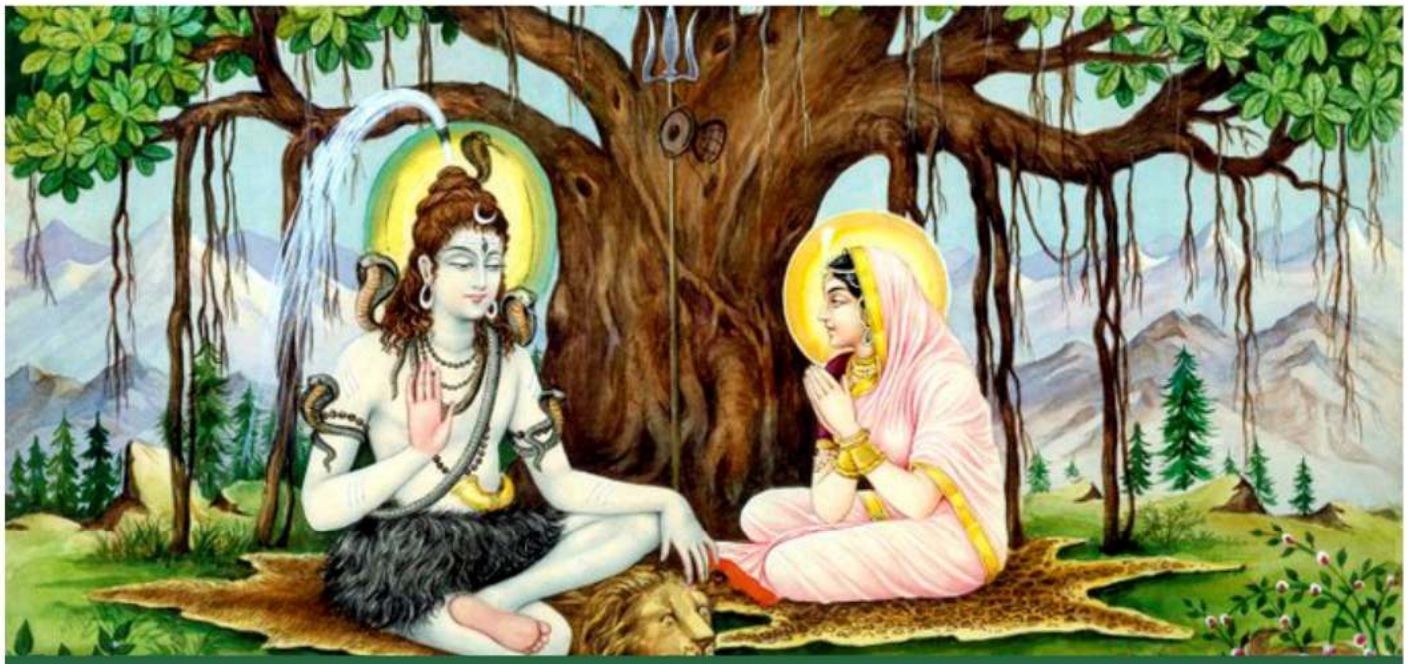

राम-तत्त्व का रहस्य

- स्वामी अखंडानंदजी

(गतांक से आगे)

राम का स्वरूप ही 'रामहृदय' का विषय है। अयोध्या के राजदरबार में राजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी के साथ सीताजी भी विराजमान हैं। साथ में लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न एवं हनुमानजी भी उपस्थित हैं। राजगुरु वसिष्ठजी भी वहीं विद्यमान हैं। श्रीरामजी ने एक दिन सीताजी को सबके बीच संकेत से कहा कि 'हनुमान हमारे निष्पाप भक्त हैं, तत्त्वोपदेश के अधिकारी हैं अतः तुम उन्हें मेरा तत्त्व समझाओ।'

सीताजी राम-रहस्य को यथार्थ में समझती थीं। वे बोलीं : ''हनुमान ! तुम शरणागत हो, ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो। मैं तुम्हें राम-तत्त्व का उपदेश करती हूँ, उसे सुनो !''

सीताजी ने श्रीराम की उपस्थिति में हनुमान को राम का रहस्य समझाया। हनुमान पर जानकीजी का सर्वोपरि वात्सल्य रहा।

अयोध्या वह जगह है जहाँ कोई योधनीय नहीं है, लड़ने और मारने के लिए कोई शत्रु नहीं है, शांति का साम्राज्य है। सीता स्वयं विद्यावृत्ति हैं - परब्रह्म-परमात्मा में डूबी हुई, तदाकार वृत्ति। शिष्य हनुमान और शास्ता राम का भेद सीतारूपी विद्यावृत्ति की उपाधि से है, नहीं तो कोई भेद नहीं है।

इन्द्रियों से दर्शन तो हो रहा है सगुण-साकार राजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी का, जो सिंहासन पर विराजमान हैं। उनके बिल्कुल पास सीताजी बैठी हैं क्योंकि बुद्धि आत्मा के बिल्कुल पास है। आप आँख से किसी मनुष्य को देखकर उसके पंडित या अपढ़ होने, सदाचारी और सद्गुणी या उससे उलटे चरित्र का होने की बात नहीं जान सकते। उसका मनुष्यत्व मात्र ज्ञात होगा, सदाचारित्व, ज्ञानित्व या भक्तत्व नहीं। इसलिए अज्ञात का ज्ञापन करने के लिए बोलना आवश्यक है। बोलने में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के अभिप्राय रहते हैं :

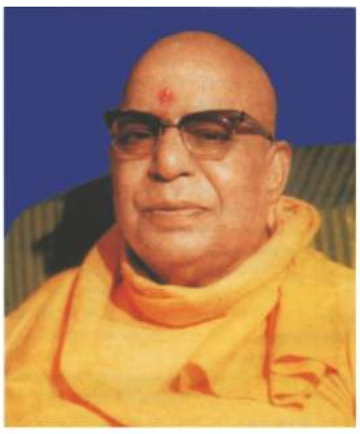

(१) कर्म को प्रेरणा देकर विधि-निषेध समझानेवाला धर्म है।

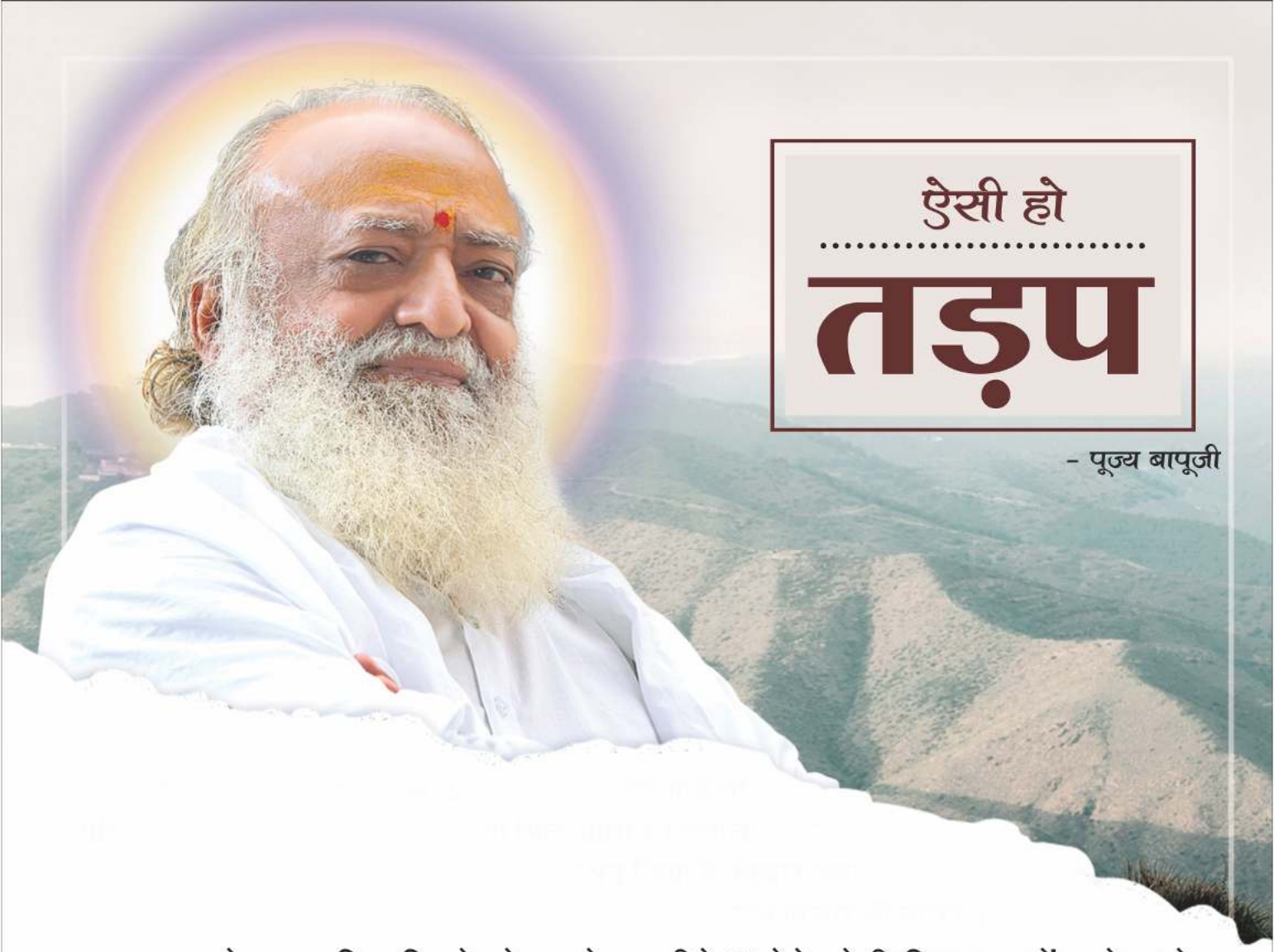

ऐसी हो तड़प

- पूज्य बापूजी

हसन नाम के एक सूफी फकीर हो गये। उनके आखिरी श्वास चल रहे थे। शिष्यों ने घेर लिया, पूछा : ''आप इतने महान कैसे बने और प्रारम्भ में आपको रंग कैसे लगा ?''

जैसे साधक एक-दूसरे को पूछते हैं कि 'बापू के पास आने का तुम्हारा प्रयोजन क्या रहा ? यहाँ का रंग कैसे लगा ?'

तो ऐसे ही हसन से मित्रों ने प्रश्न किया : ''आपको पहले रंग कैसे लगा ?''

हसन ने कहा : ''छोड़ो यह बात, अब मरने दो आराम से।''

बोले : ''किंतु हमारे हृदय में शंका रह जायेगी। यह शंका हमारे हृदय को कचोटती रहेगी, कृपा करके इतना बता के ही जाइये।''

हसन ने कहा : ''चित्त में दुनियावी विचार तो आये कि 'खाना है, कमाना है, जीना है...' लेकिन फिर सोचा कि 'आखिर क्या ? मरना है... किंतु मरना तो पसंद नहीं है तो कुछ और चीज है उसके पीछे ?' ऐसे खोजी विचार मन में आये। खोज करने के लिए एकांत में चला जाता था।

एक दिन एक तालाब के किनारे बैठा था, सोचा : 'क्या है, क्या पाना चाहिए ? जीवन का लक्ष्य क्या ? जीवन का उद्देश्य क्या ?' इतने में देखा कि एक प्यासा कुत्ता आया, पानी पीने को ज्यों पानी में उसने झाँका तो उसे अपनी परछाईं दिखी। परछाईं दिखी तो वह भौंका... तो परछाईंवाला कुत्ता भी भौंका। कुत्ता थरथराने लगा।

अब कम्पन तो हो रहा है परंतु पानी पिये बिना कोई चारा नहीं है। प्यास इतनी जोरों की लगी थी कि डर भी था, कम्पन भी था, सामनेवाला भौंकता हुआ दिखाई भी दिया पर फिर भी कुत्ते ने अपने-आपको झोंक दिया पानी में और लगा पानी पीने।

मैंने पहले उसको प्रणाम किया कि 'वाह ! प्यास ऐसी होनी चाहिए।' मुझे संकेत मिल गया कि परमात्मा को पाने की तड़प, प्यास इतनी होनी चाहिए कि तमाम भय, तमाम विरोध, तमाम संघर्ष

संत पथिकजी के साथ

आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी

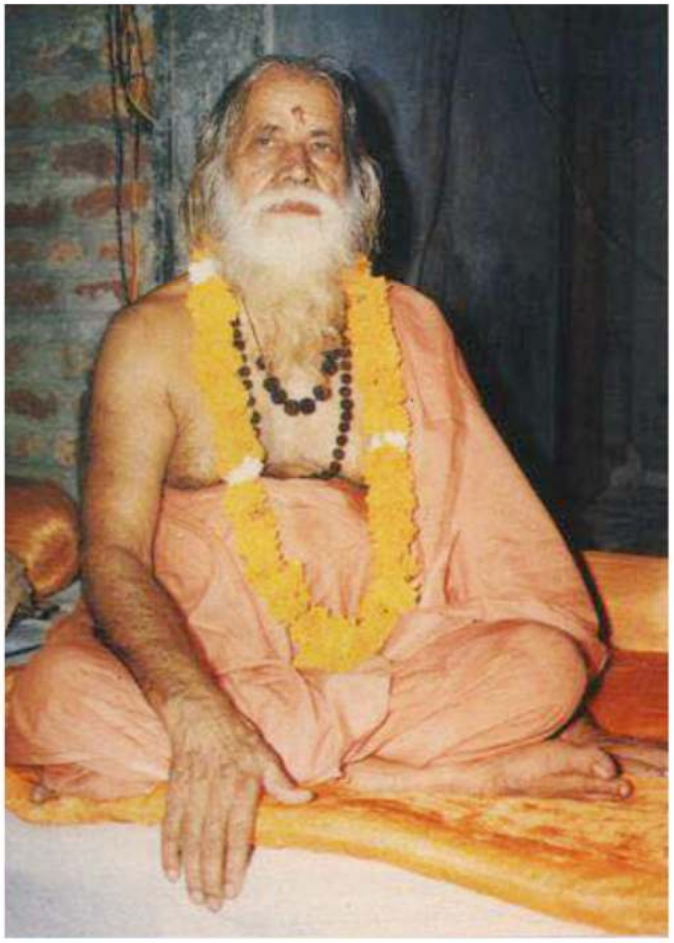

प्रश्न : काम, क्रोध, लोभ को पाप, नरक का द्वार जानते हुए भी इनसे नहीं छूट पाते, सो क्यों ?

उत्तर : आप काम, क्रोधादि को पाप एवं नरक का द्वार केवल सुन के या कहीं पढ़कर मान रहे हैं परंतु स्वयं देखा नहीं है । यदि मानकर देखने-जानने का अभिमान करेंगे तो कभी इनसे मुक्ति नहीं मिलेगी । आप काम-क्रोध के त्याग का संकल्प करेंगे, व्रत लेंगे परंतु ये आपके भीतर समयानुसार चलते ही रहेंगे । आप काम, क्रोधादि को पाप मानकर अपने को कामी, क्रोधी मान के भाग्य को न कोसते रहिये प्रत्युत जब काम हो, क्रोध हो तब उसी क्षण उसे देखिये । मन की सतह में केवल देखिये । उस समय क्रोधावेग में दूसरे को न देखिये, दूसरे पर आक्रमण न कीजिये, कुछ भी न करिये, केवल क्रोध को देखिये कि 'ऐसा क्यों हो रहा है ? कहाँ हो रहा है ?' यह देखते ही आप अपने को उससे भिन्न पायेंगे । धैर्य के साथ क्रोध को, काम को, लोभ को देखते रहिये, तभी उन्हें जान पायेंगे और जानते ही आपको विलक्षण अनुभूति होगी । अज्ञान में ही काम, क्रोधादि को आश्रय मिलता है, जानने-देखने पर इनका लोप हो जाता है ।

प्रश्न : मनुष्य संसार में सब कुछ पाकर भी अतृप्त क्यों है ?

उत्तर : इसीलिए अतृप्त है, अशांत है क्योंकि जो कुछ भी जगत में पाता है वह पूर्ण नहीं है । जो कुछ है सब अपूर्ण है, जो दिखता है वह परिवर्तनशील है । जितना भी इन्द्रियों से प्रतीत होनेवाला सुख है वह क्षणिक है । देहादिक समस्त वस्तुएँ नश्वर हैं । इसीलिए जीवन सदा अतृप्त रहता है ।

वह पूर्ण आनंद को पाकर ही तृप्त हो सकता है और आनंद उससे मिल ही नहीं सकता जो अपूर्ण है । जो पूर्ण है वह आपसे कभी भिन्न नहीं हो सकता, उसकी उत्पत्ति नहीं होती, उसका विनाश नहीं होता । जिसकी उत्पत्ति नहीं, जिसका विनाश नहीं उससे कभी दूरी नहीं होती । जिससे कभी दूरी नहीं होती उसे पाने के लिए यात्रा नहीं करनी पड़ती क्योंकि उसकी नित्य उपस्थिति की अनुभूति वहीं होती है जहाँ से खोज का आरम्भ होता है और जहाँ खोजने का अंत होता है । आरम्भ के प्रथम जो कुछ है वह अनादि है और अंत होने के पश्चात् भी जो है वही अनंत है; वही परमात्मा है, वही पूर्ण है । पूर्ण का बोध काम से नहीं प्रत्युत अंतर-विश्राम से होता है । काम विश्राम से विमुख बनाता है, विश्राम

शीत ऋतु में उठायें इसका लाभ

बहुगुणकारी व पुष्टिकर सूखा मेवा

अंजीर

अंजीर एक पौष्टिक फल है, जिसका ताजे फल व सूखे मेवे के रूप में उपयोग किया जाता है। यह मधुर, शीतल, स्निग्ध, तृप्तिकर, वजन बढ़ाने में लाभदायी, पचने में भारी, वात-पित्तशामक, जलन कम करनेवाला तथा रक्तवर्धक है। पेट के कृमि, हृदय के दर्द, लकवा (paralysis), प्यास की अधिकता, खून की खराबी से होनेवाले चर्मरोग, जलन, बवासीर, गुर्दों (kidneys) की पथरी, यकृत (liver) व प्लीहा (spleen) के रोग तथा महिलाओं के श्वेतप्रदर एवं मासिक धर्म अधिक आने की समस्या में लाभकारी है। ठंडा होने से नकसीर फूटने में, पित्त-रोगों में एवं मस्तक के रोगों में यह विशेष लाभप्रद होता है।

यह शरीर की कांति तथा सौंदर्य बढ़ानेवाला है। अंजीर को बादाम एवं पिस्ता के साथ खाने से बुद्धि बढ़ती है और अखरोट के साथ खाने से विष-विकार नष्ट होता है।

अंजीर बालकों की कब्जियत मिटाने के लिए विशेष उपयोगी है। कब्जियत के कारण जब मल आँतों में सड़ने लगता है तब उसके जहरीले तत्त्व रक्त में मिल जाते हैं और रक्तवाहिनियों में रुकावट डालते हैं, जिससे शरीर के सभी अंगों में रक्त नहीं पहुँचता। इसके फलस्वरूप शरीर कमजोर हो जाता है एवं दिमाग, नेत्र, हृदय, आमाशय, बड़ी आँत आदि अंगों में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। शरीर दुबला-पतला होकर जवानी में ही वृद्धत्व नजर आने लगता है। ऐसी स्थिति में अंजीर का उपयोग अत्यंत लाभदायी होता है। यह आँतों की शुद्धि करके रक्त बढ़ाता है एवं रक्त-परिभ्रमण को सामान्य बनाता है। यह खून की कमी एवं कब्ज को दूर करने में उत्तम मेवा है।

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२३)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल कैलेंडर, पॉकेट कैलेंडर, डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

दीवाल कैलेंडर हिन्दी, देवभाषा संस्कृत, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़ एवं अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar
सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ८२३८०९१०११ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : दीवाल कैलेंडर का मूल्य ₹ १५। ८ कैलेंडर लेने पर ₹ २० की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ १००!
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १५.५० तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १४.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना शाहाबी खजूर

खजूर वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाला है। यह शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर है। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाला यह खजूर रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद है। खजूर का सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

उपरोक्त सभी गुणों से युक्त एवं विशेष मीठे, रसीले व मुलायम कबकब खजूर

*** रोगप्रतिरोधक व पाचन शक्ति वर्धक * यकृत (liver), हड्डियों आदि सभीके लिए बलप्रद * कब्ज आदि पेट की बीमारियों में अत्यंत हितकारी**

आयु, आरोग्य एवं पुष्टि वर्धक अश्वगंधा पाक

यह पुष्टि व वीर्य वर्धक, स्नायु एवं मांसपेशियों को ताकत देनेवाला तथा कद व मांस बढ़ानेवाला है। नसों एवं धातु की कमजोरी, मानसिक तनाव (stress), याददाश्त की कमी व अनिद्रा दूर करता है। दूध के साथ इसका सेवन करने से शरीर में लाल रक्तकणों व कांति की वृद्धि होती है एवं जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

सौभाग्य शुंठी पाक

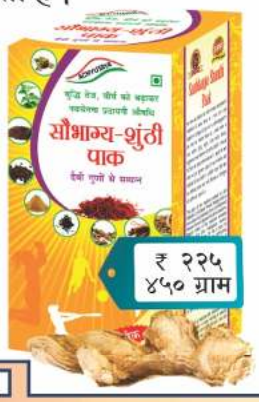

सौभाग्य शुंठी पाक एक दिव्य औषधि है, जिसकी महिमा भगवान शिवजी और ब्रह्माजी ने भी गायी है। यह उत्तम बलवर्धक है। इसके सेवन से ८० प्रकार के वातरोग, ४० प्रकार के पित्तरोग, २० प्रकार के कफरोग, ८ प्रकार के ज्वर, १८ प्रकार के मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग एवं वस्तिशूल, योनिशूल व अन्य अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

दिवाली पर बापूजी के प्यारों ने गरीबों में किये भंडारे

बाँटे गये कपड़े, कम्बल, अनाज, नकद रुपये, मिठाइयाँ आदि

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

अंबापाणी, जि. नवसारी (गुज.)

छुरिया, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.)

बेंगलुरु के वृद्धाश्रम में

मोहला (छ.ग.)

पंचेड़ जि. रतलाम (म.प्र.)

पाटन, जि. बाँसवाड़ा (राज.)

दौलतपुरा (म.प्र.)

बाड़मेर (राज.)

भुसावल (महा.)

नामली (म.प्र.)

सातनपुर, जि. समस्तीपुर (बिहार)

गायों की सेवा-पूजा करके मनायी गयी गोपाष्टमी

गांधीनगर (गुज.)

दुर्ग (छ.ग.)

बेंगलुरु

छिंदवाड़ा

राजकोट

सागर (म.प्र.)

अदिलाबाद (तेलंगाना)

गोरेगाँव-मुंबई

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से ध्यान में दिव्य अनुभूतियों के गगन में उड़ान भरने हेतु

प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त तापी नदी-तट पर स्थित एवं ध्यान, जप, सत्संग के पवित्र स्पंदनों से ओतप्रोत

संत श्री आशारामजी आश्रम, सूरत में लगेगा १ साल का 'ध्यान योग शिविर'

(२०२२ में होगा शुभारम्भ, २०२३ में होगी पूर्णाहुति)

२५ दिसम्बर २०२२ से १ जनवरी २०२३ तक

✲ महिलाओं के लिए 'चलें स्व की ओर...' शिविर ✲ विद्यार्थी शिविर ✲ ऋषि प्रसाद प्रशिक्षण शिविर ✲ युवा सेवा संघ प्रशिक्षण

पूज्य बापूजी के दीर्घकालीन सान्निध्य से सुस्पंदित,
साबरमती नदी-तट पर स्थित तपःस्थली अहमदाबाद आश्रम में

उत्तरायण ध्यान योग शिविर १५ से १९ जनवरी

ऋषि प्रसाद सेवाधारियों व श्री योग वेदांत सेवा समितियों की बैठक भी होगी। शिविरों का लाभ अवश्य लें और दूसरों को भी सूचित करें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी